केदारनाथ सिंह

केदारनाथ सिंह का जन्म 7 जुलाई, 1932 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के चकिया गांव में हुआ था। वर्ष 1956 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से एम.ए., हिंदी और वर्ष 1964 में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। गोरखपुर में उन्होंने कुछ दिन हिंदी पढ़ाई और जवाहरलाल विश्वविद्यालय से हिंदी भाषा विभाग के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुए।

केदारनाथ सिंह की कविताओं के अनुवाद लगभग सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के अलावा अंग्रेजी, स्पेनिश, रूसी, जर्मन और हंगेरियन आदि विदेशी भाषाओं में भी हुए हैं। उनकी कविताओं में मानवता, पर्यावरण, प्रकृति, भूमंडलीकरण आदि पर विचार व्यक्त होते हैं। उनकी कविताओं में अनेक शेड्स हैं क्योंकि वह बहुरंगी कवि हैं। वे अपने पूर्ववर्तियों से अलग हैं, यहां तक की परवर्तियों से भी।

वे अपनी रचनाओं में ठेठ देसी जुमलों और शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। जटिल विषयों पर सरल और आम भाषा में लेखन उनकी रचनाओं की विशेषता है। उनकी कविताओं में गांव की प्राकृतिक आभा की अनेक छवियां दिखाई देती हैं। उनका कहना है "मैं गांव का आदमी हूं और दिल्ली में रहते हुए भी मैं एक क्षण के लिए नहीं भूलता कि मैं गांव का आदमी हूं।"

उनकी मुख्य कृतियां हैं-

कविता संग्रह- अभी बिल्कुल अभी, जमीन पक रही है, यहां से देखो, बाघ, अकाल में सारस, उत्तर कबीर और अन्य कविताएं, टॉलस्टाय और साइकिल, सृष्टि पर पहरा।

आलोचना- कल्पना और छायावाद, आधुनिक हिंदी कविता में बिंबविधान, मेरे समय के शब्द, मेरे साक्षात्कार।

संपादन- तानाबाना, समकालीन रूसी कविताएं, कविता दशक, साखी (अनियतकालिक पत्रिका), शब्द (अनियतकालिक पत्रिका)

पुरस्कार

ज्ञानपीठ पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, कुमारन आशान पुरस्कार, जीवन भारती सम्मान, दिनकर पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार और व्यास सम्मान।